

## न्यून से सीधे मिट्टी

मुझे न बाँटे ज्यारे,

पुकारती है अपनी मिट्टी।

लाग है यह मेशे,

तो रही है दुखी हस्ती।

कदम रखा मिट्टी पर दुश्मन,

जो गई अबका अरमान।

धोन लिया हमारी जान,

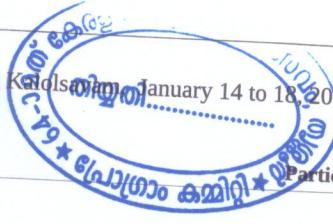
न छुने दूँगा मेरी शान।

मासूमी अँगे ही गई नम,

फिर भी उम्मीद है हर कदम।

मन लगा भारी दुर्द से,

फिर भी मुस्कुराती तिधास से।



किल पर है शांति की तलाश,  
करूँगा मैं दुश्मनों का विनाश।  
तौड़ दिया हूँजारै स्पना,  
आधार है मिट्टी अपना।

स्त्रैंसे हो गई बंद,  
फिर भी बद्यांड़गा, मेरा पसंदु।  
काट लिया मेरे बदन,  
पैद्याब है मेरी, यह बतन।

आगे बढ़ूँगा हर ढाल,  
मैं बनूँगा मिट्टी को ढाल।  
विनाश की हुँआ फैली चार ओर,  
मानव की दुआ उगे गगन की ओर।

खून से सीधा मिट्टी,  
कर कर्तव्य है यह जेरी।  
स्थिलैगा शांति की सुबह,  
दैनिक दूँसुन की प्रवाह।